26.08.2020 — B.A. Part-II — Economics (Hons.), Paper-I — Indian Economy — 6th Semester

Dr. Bibin Kumar
Professor, Deptt. of Economics
R.R.S. College, Mokama
P.P.U., Patna

AUGUST 2020 — JULY – TUESDAY — 14

Discuss Agricultural Labour: Problems, measures for improvement / "Labour in India"

MARGINMAN

भारत में कृषि को प्रधान देश है। यहाँ की आबादी का लगभग 67% हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। फसल कटाई के समय कृषि कार्य से जुड़े होते हैं। उस समय ही श्रमिकों की आवश्यकता होती है। हमारे देश में अधिकांश कृषि कार्य अनियमित प्रकार से किया जाता है, इसलिए यह काफी पिछड़ी हुई अवस्था में है। कृषि के कमजोर प्रगति के कारण भारतीय कृषि श्रमिकों को कम मजदूरी मिलती है। ये मजदूर साल में कई महीने बेरोजगारी का सामना करते हैं। इसकी वजह से उनकी गरीबी बढ़ जाती है, कम पूंजी निवेश करते हैं, जिससे कि उत्पादन का पर्याप्त अवसर होते हैं फलस्वरूप, उनकी गरीबी को निश्चित तौर पर बढ़ाती है। भारत में कृषि आजादी के 73 वर्षों के बाद भी आज काफी दयनीय स्थिति में है, जिसके कारण मजदूरों को कम मजदूरी प्राप्त होती है। इस कारण उनकी गरीबी को निर्धनता कहा जाता है। हमारे देश में आज भी लिंग के आधार पर मजदूरी का निर्धारण किया जाता है। हमारे देश में प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः 63 प्र.श. की आबादी कृषि पर आधारित है एवं खेती-बाड़ी का बड़ा क्षेत्र मौसम पर आधारित है। देश के कृषि श्रम को असंगठित क्षेत्र में रखा गया है, जिसका कारण उनके लिए अन्य कानून नहीं है यानी है और इन्हें अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग मजदूरी दी जाती है। आज भी देश के कृषि क्षेत्र के ये असंगठित क्षेत्र के श्रमिक अनिश्चित एवं अरक्षित जीवन जी रहे हैं। कृषि श्रमिक हमारे समाज का सबसे पिछड़ित, वंचित एवं शोषित जीवन जीने को मजबूर हैं। आज भी यह वर्ग कई प्रकार की निर्धनता, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं का सामना कर रहा है, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं:

① आय एवं मजदूरी: हमारे देश में कृषि श्रमिकों की मजदूरी काफी कम है फलस्वरूप देश श्रमिकों की प्रतिव्यक्ति आय एवं पारिवारिक आय काफी कम है। देश में हरित क्रांति के बाद मजदूरी की दरों में काफी वृद्धि हुई है लेकिन देश में बढ़ती कम दर से मंहगाई के सामने यह मजदूरी काफी कम प्रतीत होती है कारण कि इस अनुपात में वस्तुओं एवं सेवाओं की दरों में वृद्धि हुई है। वास्तविक मजदूरी की दरों में उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हो पायी। मनरेगा की मजदूरी दर भी उस अनुपात में काफी कम प्रतीत होती है।

② काम और रोजगार की परिस्थितियाँ: हमारे देश कृषि श्रमिकों को वर्ष के कुछ कारण वातावरण के कई महीने बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। कृषि के क्षेत्रों में कोई काम नहीं रहता है और न ही इस प्रकार कोई वैकल्पिक व्यवस्था की जाती है। काम के दिनों में इन मजदूरों को खेतिहर श्रमिकों को बेरोजगारी और बेकारी की समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है जिसमें कम मजदूरी का मिलना, मजदूरों का शोषण जैसी समस्याएँ शामिल हैं।

③ खेतिहर मजदूरों की ऋणग्रस्तता: आज ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी की ऋणग्रस्तता कम मजदूरी और बेरोजगारी एवं निम्न आय के कारण करीब 50 प्रतिशत ग्रामीण

कृषिकार्यों से अलग होना चाहते हैं या पेशा का चयन करते हैं, हमारे देश में जनसंख्या के क्रमशः अर्थात वर्ष 1951 में श्रमिकों की संख्या कुल 70 मिलियन थी जो कि वर्ष 2011 में 119 मिलियन हो गयी थी। वर्ष 1951 में कृषकों के साथ ही श्रमिक मजदूरों की संख्या 97.2 मिलियन थी जो कि 1991 में बढ़कर 285.2 मिलियन हो गई थी। जबकि कृषि श्रमिकों की संख्या वर्ष 1951 में 27.3 मिलियन से बढ़कर वर्ष 1991 में 74.6 मिलियन हो गई थी। इसके तात्पर्य यह है कि वर्ष 1951 से 1991 के बीच की अवधि में श्रमिकों की संख्या में लगभग तीन से चार गुना की वृद्धि हुई है।

(4) ऋणग्रस्तता : आज भी सरकार के द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधाओं के बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों के कोई, मध्यम किसान एवं मजदूर वर्ग, साहूकारों एवं अन्य स्रोतों से ही ऊँची दरों पर ऋण प्राप्त करते हैं। यही कारण है कि किसान कर्ज के दुष्चक्र में फंसते जा रहे हैं और आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ी है।

(5) प्रवासी श्रमिकों की संख्या में वृद्धि : देश में क्षेत्रीय असंतुलन के कारण कुछ राज्यों एवं क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़े हैं। वहीं दूसरी ओर देश के कई हिस्सों में कार्य एवं सुविधाओं की उपेक्षा के कारण वहाँ रोजगार का कोलकाता है। ऐसी परिस्थिति में रोजगार की तलाश में ऐसे मजदूर देश के दूसरे हिस्सों में बड़ी संख्या में काम और रोजगार की तलाश में पलायन करते हैं। वहाँ ऐसे मजदूरों को आर्थिक, मानसिक, सामाजिक एवं राजनीतिक शोषण होता है। हाल ही में उत्पन्न कोरोना वायरस के उदाहरण देश या उसके 'लॉकडाउन काल' में विभिन्न राज्यों द्वारा शहरों की उपेक्षापूर्ण नीतियों के कारण देश के पलायित मजदूरों की दुर्दशा देखने को मिली है। यहाँ उन्हें खाद्य सुरक्षा एवं सम्मान की व्यवस्था के साथ ही सरकार को और स्वयं कुछ पहरा भी देश के आम लोगों के लिए करना होगा।

(6) कृषि कार्य में महिला श्रमिकों हेतु कम मजदूरी : आज भी देश के विभिन्न हिस्सों में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कम मजदूरी दी जाती है। जबकि दोनों एक ही काम को करते हैं। आमतौर पर महिला श्रमिकों को कृषि एवं घरेलू कार्यों की उपेक्षापूर्ण एवं मजदूरी रखा जाता है। सरकार द्वारा समान मजदूरी हेतु समान मजदूरी परिस्थिति उत्पन्न काम के महिला सुरक्षा की दिशा में कार्य किये जाने चाहिए।

(7) बाल श्रमिकों की संख्या में लगातार वृद्धि : विश्व के विभिन्न हिस्सों की भाँति ही हमारे देश में भी बाल - श्रमिकों की संख्या बहुत ज्यादा है। एक अनुमान के अनुसार, अभी भी लगभग 1.7 करोड़ से 4 करोड़ तक बच्चे मजदूर हैं। इनमें से अधिकांश बाल श्रमिक लगभग 17.5 करोड़ से 44 करोड़ तक अनुमानित हैं।

अर्थव्यवस्था का असंतुलित क्षेत्रीय विकास (8) खाद्य सुरक्षा का अभाव (9) बेरोजगारी (10) दोषपूर्ण भूमि-प्रबंधन